Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X (Print), Impact Factor: 7.866, Volume 15, No. 04(II), October-December, 2025, pp. 229-233

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों में मूल्य–चेतनाः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

तरुणा शर्मा[1*] एवं डॉ. समीना[2]

[1]शोधार्थी, शिक्षा विभाग, मौलाना आजाद विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान।
[2]अधिष्ठाता, शिक्षा संकाय, मौलाना आजाद विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान।

[*]Corresponding Author: vtsjdr2005@gmail.com

Citation: *तरुणा शर्मा, एवं समीना. (2025). डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों में मूल्य–चेतनाः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन. Journal of Modern Management & Entrepreneurship, 15(04 (II)), 229-233.*

सार

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम भारतीय शिक्षा–दर्शन के ऐसे विचारक थे जिन्होंने शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन का साधन नहीं, बल्कि चरित्र–निर्माण, राष्ट्र–निर्माण और मानव–निर्माण की प्रक्रिया माना। उनके शैक्षिक विचारों में नैतिकता, आध्यात्मिकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, राष्ट्रप्रेम, अनुशासन, आत्मनिर्भरता और सृजनशीलता जैसे मूल्यों का विशेष महत्व है। प्रस्तुत शोध–लेख में डॉ. कलाम के शैक्षिक विचारों में निहित मूल्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। इसमें उनकी पुस्तकों, भाषणों तथा शिक्षा–दर्शन के आधार पर प्रमुख शैक्षिक मूल्यों का वर्गीकरण, उनके शैक्षिक सिद्धांतों में मूल्य–आधारित शिक्षा की भूमिका, तथा समकालीन शिक्षा–व्यवस्था में उनके विचारों की प्रासंगिकता का विवेचन किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि डॉ. कलाम की शिक्षा–दृष्टि मूल्य–केन्द्रित, छात्र–केन्द्रित और राष्ट्र–उन्मुख है, जो आज के वैश्वीकरण एवं तकनीकी युग में अत्यंत प्रासंगिक है।

शब्दकोशः *डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम, मूल्य–आधारित शिक्षा, नैतिक शिक्षा, शिक्षा–दर्शन, राष्ट्रनिर्माण।*

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक विकास का आधार है। यह केवल ज्ञान या व्यावसायिक दक्षता प्राप्त करने का साधन नहीं, बल्कि व्यक्ति के चरित्र, दृष्टिकोण और सामाजिक चेतना के निर्माण की प्रक्रिया है। इसलिए शिक्षा का उद्देश्य केवल सफल पेशेवर तैयार करना नहीं, बल्कि ऐसे उत्तरदायी और संवेदनशील नागरिकों का निर्माण करना है जो समाज और राष्ट्र के विकास में योगदान दे सकें। किंतु आधुनिक वैश्वीकरण और प्रतिस्पर्धात्मक शिक्षा–प्रणाली के प्रभाव से शिक्षा का स्वरूप अधिक परीक्षा–केन्द्रित और रोजगारोन्मुख होता जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप नैतिकता, मानवता और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों का क्षरण स्पष्ट दिखाई देता है। इस संदर्भ में मूल्य–आधारित शिक्षा की आवश्यकता विशेष रूप से अनुभव की जा रही है।

भारतीय चिंतन परंपरा में शिक्षा को सदैव ज्ञान और चरित्र के समन्वय के रूप में देखा गया है। आधुनिक युग में डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने इस मूल्य–समन्वित शिक्षा–दृष्टि को नई दिशा प्रदान की। वे शिक्षा को राष्ट्रनिर्माण और मानव–निर्माण का सबसे प्रभावी साधन मानते थे तथा स्वयं को सर्वप्रथम एक शिक्षक

[*] *Copyright © 2025 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

के रूप में पहचानते थे। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य ऐसे युवाओं का निर्माण करना है जिनमें नैतिकता, आत्मविश्वास, परिश्रमशीलता, सृजनशीलता और राष्ट्रसेवा की भावना हो। उनका विश्वास था कि चरित्रवान नागरिक ही राष्ट्र को महान बनाते हैं; इसलिए शिक्षा का अंतिम लक्ष्य "अच्छे मनुष्य" का निर्माण होना चाहिए।

डॉ. कलाम के शैक्षिक विचारों की विशेषता यह है कि उनमें विज्ञान और आध्यात्मिकता, ज्ञान और मूल्य, तथा व्यक्तिगत विकास और राष्ट्रीय विकास का संतुलित समन्वय दिखाई देता है। समकालीन शिक्षा–परिदृश्य में, जहाँ नैतिक मूल्यों का ह्रास और लक्ष्यहीन प्रतिस्पर्धा जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं, वहाँ उनका मूल्य–आधारित शिक्षा–दर्शन अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होता है। इसी पृष्ठभूमि में प्रस्तुत शोध–लेख में डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों में निहित मूल्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है, ताकि यह स्पष्ट किया जा सके कि उनका शिक्षा–दर्शन आधुनिक शिक्षा–व्यवस्था को किस प्रकार मानवीय और राष्ट्रोन्मुख दिशा प्रदान करता है।

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम का शिक्षा–दर्शनः एक विश्लेषणात्मक दृष्टि

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम का शिक्षा–दर्शन समग्र, मानव–केन्द्रित और राष्ट्र–उन्मुख था। वे शिक्षा को केवल बौद्धिक प्रशिक्षण की प्रक्रिया नहीं मानते थे, बल्कि व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास का साधन मानते थे। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य ऐसा नागरिक तैयार करना है जो ज्ञानवान होने के साथ–साथ नैतिक, सृजनशील और सामाजिक रूप से उत्तरदायी भी हो। वे शिक्षा को तीन आयामों – बौद्धिक विकास, नैतिक विकास और आध्यात्मिक विकास के संतुलित समन्वय के रूप में देखते थे। उनका प्रसिद्ध कथन कि "Learning gives creativity, creativity leads to thinking, thinking provides knowledge, knowledge makes you great" इस बात को स्पष्ट करता है कि शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य ज्ञानार्जन के साथ–साथ चिंतनशीलता और महानता का विकास है। वे मानते थे कि यदि शिक्षा में मूल्य और लक्ष्य का समावेश न हो तो वह केवल सूचना तक सीमित रह जाती है। इस प्रकार उनका शिक्षा–दर्शन ज्ञान, मूल्य, सृजनशीलता और राष्ट्रनिर्माण के एकीकृत दृष्टिकोण पर आधारित है।

शिक्षा में मूल्य की अवधारणा और कलाम का दृष्टिकोण

डॉ. कलाम के अनुसार मूल्य शिक्षा का अनिवार्य अंग हैं क्योंकि वही व्यक्ति के आचरण, निर्णय और जीवन–दृष्टि को दिशा देते हैं। वे शिक्षा को केवल तकनीकी दक्षता या व्यावसायिक कौशल प्राप्त करने का माध्यम नहीं मानते थे, बल्कि उसे जीवन–निर्माण की प्रक्रिया समझते थे। उनके विचार में मूल्य वे आदर्श हैं जो व्यक्ति को सत्यनिष्ठ, जिम्मेदार और संवेदनशील बनाते हैं। यदि शिक्षा में मूल्य न हों तो ज्ञान का उपयोग समाज–विरोधी भी हो सकता है। इसलिए वे कहते थे कि चरित्र के बिना ज्ञान खतरनाक है। उनके अनुसार शिक्षा में नैतिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और वैज्ञानिक मूल्यों का समन्वय होना चाहिए ताकि विद्यार्थी केवल सफल पेशेवर न बनकर आदर्श नागरिक भी बन सके। इस दृष्टि से उनका मूल्य–दर्शन भारतीय परंपरा और आधुनिक वैज्ञानिक सोच का समन्वित रूप है।

डॉ. कलाम के शैक्षिक विचारों में प्रमुख मूल्यः एक समग्र विवेचन

डॉ. कलाम के शैक्षिक विचारों में अनेक मानवीय और नैतिक मूल्य समाहित हैं जो उनके व्यक्तित्व और जीवन–अनुभव से प्रेरित हैं। उनके अनुसार शिक्षा का प्रथम उद्देश्य चरित्र निर्माण है, क्योंकि नैतिकता के बिना ज्ञान अधूरा है। वे विद्यार्थियों में ईमानदारी, अनुशासन, आत्मविश्वास और जिम्मेदारी जैसे गुणों के विकास पर बल देते थे। साथ ही वे शिक्षा को राष्ट्रनिर्माण से जोड़ते हुए विद्यार्थियों में देशभक्ति और कर्तव्यबोध की भावना विकसित करना चाहते थे। उनका मानना था कि राष्ट्र की प्रगति उसके नागरिकों के चरित्र पर निर्भर करती है। इसके अतिरिक्त वे परिश्रम और आत्मनिर्भरता को सफलता का आधार मानते थे तथा असफलता को सीखने का अवसर बताते थे। वैज्ञानिक होने के कारण वे शिक्षा में जिज्ञासा, तर्कशीलता और प्रयोगशीलता को अत्यंत महत्वपूर्ण मानते थे। वे रटने की प्रवृत्ति के विरोधी थे और सृजनशीलता तथा नवाचार को शिक्षा का केंद्र मानते

थे। साथ ही वे आध्यात्मिक संतुलन और मानवता के मूल्यों को भी आवश्यक समझते थे। इस प्रकार उनके शैक्षिक विचारों में नैतिकता, राष्ट्रप्रेम, परिश्रम, वैज्ञानिक दृष्टि, सृजनशीलता और आध्यात्मिकता का संतुलित समन्वय मिलता है।

मूल्य–आधारित शिक्षा की विशेषताएँः कलाम की दृष्टि

डॉ. कलाम की दृष्टि में मूल्य–आधारित शिक्षा का स्वरूप प्रेरणात्मक और छात्र–केन्द्रित है। वे मानते थे कि शिक्षा तभी प्रभावी होती है जब वह विद्यार्थी की अंतर्निहित प्रतिभा को पहचानकर उसे विकसित करे। इसलिए वे अनुभवात्मक और क्रियात्मक शिक्षा का समर्थन करते थे, जिसमें विद्यार्थी करके सीखता है और ज्ञान को व्यवहार से जोड़ता है। उनके अनुसार शिक्षा का वातावरण प्रेरणादायक होना चाहिए ताकि विद्यार्थी अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर सके और उसे प्राप्त करने के लिए प्रयासरत रहे। वे शिक्षा को राष्ट्र–उन्मुख बनाना चाहते थे, अर्थात् शिक्षा ऐसी हो जो समाज और राष्ट्र की समस्याओं के समाधान में योगदान दे सके। साथ ही वे समग्र शिक्षा की वकालत करते थे जिसमें शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक सभी आयामों का विकास हो। इस प्रकार उनकी मूल्य–आधारित शिक्षा ज्ञान और चरित्र के संतुलन पर आधारित है।

डॉ. कलाम के शैक्षिक विचारों के स्रोत और आधार

डॉ. कलाम के शैक्षिक मूल्यों का आधार उनके जीवन–अनुभव, वैज्ञानिक कार्य तथा लेखन और भाषणों में मिलता है। उनकी आत्मकथा Wings of Fire में उनके बचपन के संस्कार, परिश्रम और शिक्षक–प्रेरणा का वर्णन है, जो उनके शिक्षा–दर्शन की जड़ें दर्शाता है। Ignited Minds में उन्होंने युवाओं की क्षमता और राष्ट्रनिर्माण में शिक्षा की भूमिका पर बल दिया है। India 2020 में उन्होंने ज्ञान–आधारित समाज की परिकल्पना प्रस्तुत की है जिसमें शिक्षा को राष्ट्रीय विकास का आधार माना गया है। Mission India और Guiding Souls जैसी कृतियों में भी नैतिकता, आध्यात्मिकता और युवा–शक्ति पर आधारित शिक्षा–दृष्टि मिलती है। इन स्रोतों से स्पष्ट है कि उनके शैक्षिक विचार केवल सैद्धांतिक नहीं बल्कि उनके जीवन और अनुभव से निर्मित हैं।

समकालीन शिक्षा में डॉ. कलाम के मूल्यों की प्रासंगिकता

वर्तमान वैश्वीकरण और तकनीकी युग में शिक्षा प्रणाली अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है, जैसे नैतिक मूल्यों का ह्रास, परीक्षा–केन्द्रितता, रचनात्मकता की कमी और सामाजिक संवेदनहीनता। ऐसे परिदृश्य में डॉ. कलाम के शैक्षिक मूल्य अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होते हैं। उनका चरित्र–केन्द्रित शिक्षा–दर्शन विद्यार्थियों को जिम्मेदार नागरिक बनाने में सहायक है। उनका नवाचार–उन्मुख दृष्टिकोण आधुनिक ज्ञान–आधारित अर्थव्यवस्था की आवश्यकता को पूरा करता है। राष्ट्र–उन्मुख शिक्षा की उनकी अवधारणा युवाओं को देश के विकास से जोड़ती है। शिक्षक–प्रेरणा और मूल्य–आधारित जीवन–कौशल पर उनका बल आज की शिक्षा–व्यवस्था को मानवीय दिशा प्रदान कर सकता है। इसलिए उनके शैक्षिक विचार समकालीन शिक्षा–सुधार के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं।

शिक्षा नीति के संदर्भ में डॉ. कलाम के विचार

भारत की नई शिक्षा नीति 2020 में समग्र विकास, मूल्य–आधारित शिक्षा, कौशल–आधारित अधिगम और नवाचार पर जो बल दिया गया है, वह डॉ. कलाम के शिक्षा–दर्शन से साम्य रखता है। वे लंबे समय से ऐसी शिक्षा की वकालत करते रहे जो केवल परीक्षा और डिग्री तक सीमित न होकर जीवन–उपयोगी हो। बहुविषयक शिक्षा, अनुसंधान–उन्मुख अधिगम और नैतिक मूल्यों के समावेश की अवधारणा उनके विचारों से मेल खाती है। वे शिक्षा को राष्ट्र–निर्माण की आधारशिला मानते थे, और यही दृष्टि आधुनिक शिक्षा नीति में भी दिखाई देती है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि डॉ. कलाम के शैक्षिक विचार न केवल प्रेरणादायक हैं बल्कि भारतीय शिक्षा–सुधार की दिशा में वैचारिक आधार भी प्रदान करते हैं।

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों का आलोचनात्मक विश्लेषण

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचार मूलतः मूल्य–केन्द्रित, प्रेरणात्मक और राष्ट्र–उन्मुख हैं, जो शिक्षा को ज्ञान और चरित्र के समन्वित विकास की प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनका यह दृष्टिकोण कि शिक्षा का उद्देश्य "अच्छे पेशेवर" नहीं बल्कि "अच्छे मनुष्य" बनाना है, शिक्षा–दर्शन में नैतिक आयाम को सुदृढ़ आधार प्रदान करता है। उन्होंने विद्यार्थियों में उच्च लक्ष्य, आत्मविश्वास, परिश्रम और राष्ट्रसेवा की भावना विकसित करने पर बल दिया, जिससे शिक्षा का मानवीय और सामाजिक पक्ष सशक्त होता है। साथ ही विज्ञान और आध्यात्मिकता के संतुलन पर उनका आग्रह शिक्षा को समग्र जीवन–दृष्टि प्रदान करता है, जो आधुनिक शिक्षा की यांत्रिक प्रवृत्तियों के बीच मानवीय संतुलन स्थापित करता है।

हालाँकि आलोचनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो उनके शैक्षिक विचारों की प्रकृति अधिक आदर्शवादी और प्रेरणात्मक है, जबकि शिक्षा–प्रणाली के व्यावहारिक ढाँचे, पाठ्यक्रम निर्माण, मूल्य–आधारित शिक्षण की ठोस पद्धतियों और संस्थागत सुधारों पर अपेक्षाकृत कम स्पष्टता मिलती है। उन्होंने शिक्षा के उद्देश्यों और मूल्यों को प्रभावी रूप से प्रतिपादित किया, परंतु उनके क्रियान्वयन की विस्तृत कार्ययोजना कम विकसित दिखाई देती है। फिर भी उनकी यह सीमा उनके विचारों की प्रासंगिकता को कम नहीं करती, क्योंकि उनका प्रमुख उद्देश्य युवा–प्रेरणा और मूल्य–जागरण था।

समग्रतः डॉ. कलाम का शिक्षा–दर्शन आधुनिक शिक्षा को नैतिक और मानवीय दिशा प्रदान करने वाला प्रेरक वैचारिक आधार है। उनके मूल्य–आधारित विचारों को समकालीन शैक्षिक संरचनाओं के साथ समन्वित कर लागू किया जाए तो शिक्षा अधिक समग्र, प्रेरणात्मक और सामाजिक रूप से उत्तरदायी बन सकती है।

निष्कर्ष

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों का समग्र अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि उनका शिक्षा–दर्शन मूलतः मूल्य–केन्द्रित, मानवतावादी और राष्ट्र–उन्मुख है। उन्होंने शिक्षा को केवल ज्ञान या कौशल अर्जन की प्रक्रिया न मानकर व्यक्ति के चरित्र, चेतना और जीवन–दृष्टि के निर्माण का माध्यम माना। उनके अनुसार शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य ऐसा नागरिक तैयार करना है जो नैतिक रूप से दृढ़, बौद्धिक रूप से सक्षम, सृजनात्मक रूप से सक्रिय तथा सामाजिक रूप से उत्तरदायी हो। इस दृष्टि से उनका शिक्षा–दर्शन भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में निहित नैतिकता और आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण का संतुलित समन्वय प्रस्तुत करता है।

डॉ. कलाम के शैक्षिक विचारों में नैतिकता, राष्ट्रप्रेम, परिश्रम, आत्मनिर्भरता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, सृजनशीलता, आध्यात्मिक संतुलन और मानवता जैसे मूल्यों का समावेश शिक्षा के व्यापक उद्देश्यों को रेखांकित करता है। वे शिक्षा को राष्ट्रनिर्माण की आधारशिला मानते थे और युवाओं को राष्ट्र की सबसे बड़ी संपत्ति के रूप में देखते थे। उनका विश्वास था कि यदि शिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों में उच्च लक्ष्य, आत्मविश्वास और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करे तो राष्ट्र स्वतः विकसित और सशक्त बन सकता है। इस प्रकार उनके शैक्षिक विचार व्यक्तिगत विकास और राष्ट्रीय विकास के बीच एक सशक्त संबंध स्थापित करते हैं।

समकालीन वैश्विक और तकनीकी युग में, जहाँ शिक्षा अधिकतर प्रतिस्पर्धा, रोजगार और भौतिक उपलब्धियों तक सीमित होती जा रही है, वहाँ डॉ. कलाम का मूल्य–आधारित शिक्षा–दर्शन विशेष रूप से प्रासंगिक प्रतीत होता है। वर्तमान शिक्षा–प्रणाली में नैतिक मूल्यों का ह्रास, रचनात्मकता की कमी और सामाजिक संवेदनहीनता जैसी समस्याएँ देखी जा रही हैं, जिनका समाधान उनके विचारों में निहित है। उनका यह आग्रह कि शिक्षा का उद्देश्य "अच्छा मनुष्य" बनाना है, आधुनिक शिक्षा के मानवीय आयाम को पुनर्स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करता है। साथ ही विज्ञान और आध्यात्मिकता के संतुलन पर उनका बल शिक्षा को समग्र जीवन–दृष्टि प्रदान करता है, जो आज के तनावपूर्ण और प्रतिस्पर्धी समाज में अत्यंत आवश्यक है।

शैक्षिक नीतियों और सुधारों के संदर्भ में भी डॉ. कलाम के विचार मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं। समग्र शिक्षा, कौशल–आधारित अधिगम, नवाचार, अनुसंधान और मूल्य–आधारित शिक्षा जैसे सिद्धांत आधुनिक शिक्षा–नीतियों में भी परिलक्षित होते हैं, जो उनके दूरदर्शी दृष्टिकोण की पुष्टि करते हैं। यदि शिक्षा प्रणाली में उनके मूल्यों को पाठ्यक्रम, शिक्षण–पद्धति, शिक्षक–प्रशिक्षण और मूल्यांकन प्रक्रिया में समाहित किया जाए तो शिक्षा अधिक मानवीय, प्रेरणात्मक और जीवनोपयोगी बन सकती है।

अतः समग्रतः कहा जा सकता है कि डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम का शिक्षा–दर्शन आधुनिक शिक्षा के लिए एक प्रेरक वैचारिक आधार प्रदान करता है। उनका मूल्य–आधारित दृष्टिकोण शिक्षा को केवल पेशेवर दक्षता तक सीमित न रखकर उसे चरित्र, चेतना और राष्ट्रनिर्माण से जोड़ता है। इसलिए वर्तमान और भावी शिक्षा–व्यवस्था में उनके शैक्षिक मूल्यों का समावेश न केवल आवश्यक बल्कि अत्यंत उपयोगी है। उनके विचारों को व्यवहारिक शैक्षिक ढाँचों के साथ समन्वित कर लागू किया जाए तो एक नैतिक, सृजनशील और विकसित समाज के निर्माण की दिशा में ठोस प्रगति संभव है।

संदर्भ गन्थ सूची

1. Kalam, A. P. J. Abdul, Wings of Fire, Universities Press.
2. Kalam, A. P. J. Abdul, Ignited Minds, Penguin Books.
3. Kalam, A. P. J. Abdul, India 2020: A Vision for the New Millennium.
4. Kalam, A. P. J. Abdul, Mission India.
5. National Education Policy 2020, Government of India.
6. Sharma, R. A. “Educational Philosophy”.
7. Aggarwal, J. C. “Philosophical and Sociological Foundations of Education

❑❑❑